खबर गई कि राजा चंपकेश्वर के घर में ऐसी कन्या पैदा हुई है कि जिसके रूप को देखतेही सुर, नर, मुनि मोहित हो रहते हैं. फिर मुल्क मुल्क के सब राजाओंने, अपनी अपनी मूरतें लिखवा लिखवा, ब्राह्मणों के हाथ, राजा चंपकेश्वरके यहां भेजियां. राजा ने ले अपनी बेटीको सब राजाओं की तसवीरें दिखाईं. पर उसके मन में कोई न समाई. तब तो राजा ने कहा तू स्वयंवर कर. वह बात भी उन्ने न मानी; और अपने बाप से कहा रूप, बल, ज्ञान, जिस में ये तीनों गुण होंगे पिता उसे मुझे देना.

गरज़, जब कितने एक दिन बीते, तो चारों देससे चार बर आये. फिर उन से राजा ने कहा अपना अपना गुण बिद्या मेरे आगे ज़ाहिर कर कहो. उन में से, एक बोला मुझ में यह बिद्या है कि एक पकड़ा मैं बनाकर पांच लअल को बेचता हूं जब उसका मोल मेरे हाथ आता है, तब उस में से एक लअल ब्राह्मण को देता हूं; दूसरा देवताको चढ़ाता हूं; तीसरा अपने अंग लगाता हूं; चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं; पांचवें को बेचकर, रुपये ले, नित भोजन करता हूं. यह बिद्या दूसरा कोई नहीं जानता. और मेरा जो रूप है सो ज़ाहिर है. दूसरा बोला मैं जल थल के पशु पंछी की भाषा जानता हूं. मेरे बल का दूसरा नहीं. और सुन्दरताई मेरी आप के आगे है. तीसरे ने कहा मैं ऐसा शास्त्र समझता हूं कि मेरे समान दूसरा नहीं. और खुबसूरती मेरी तुम्हारे रूबरू है. चौथे ने कहा मैं शस्त्र बिद्या में एकही हूं. दूसरा मुझसा नहीं.

शब्दबेधी तीर मारता हूं. और मेरा जस जग में रोशन है; आप भी देखतेही हैं.

यह चारों की बात सुन, राजा अपने जी में चिन्ता करने लगा कि चारों गुण में बराबर हैं; किसे कन्या दूं. यह सोचकर, उसने बेटी के पास जा, चारों का गुण बयान किया; और कहा मैं तुझे किसे दूं? यह सुन के, वह लाज की मारी, नीची गरदन कर, चुप हो रही; और कुछ जवाब न दिया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! यह स्त्री किस के योग है? राजा ने कहा जो कपड़ा बनाकर बेचता है, सो जात का सूद्र है, और जो भाषा जानता है, वह जात का बैस है. जो शास्त्र पढ़ा है, सो ब्राह्मण है. और शब्दबेधी उस का सजाती है. यह स्त्री उसके लाइक़ है. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी पेड़ में जा लटका. और राजा भी, वहां जा उसे बांध, कांधे पर रखकर ले चला.

आठवीं कहानी

तब बैताल ने कहा ऐ राजा! मिथलावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का राजा गुणाधिप. उसकी सेवा करने को, दूर देस से एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया. रोज़ उस राजा के दरशन को जाया करता. लेकिन मुलाक़ात

(१) मिथिला.

न होती थी. और जितना धन बह लाया था, सो बरस रोज़ के अरसे में सब बैठकर यहां खाया; और वहां घर उसका वैरान हो गया.

एक दिन की बात है कि राजा शिकार को सवार हुआ. और चिरमदेव भी उसकी सवारी के साथ हो लिया. इत्तिफ़ाक़न, राजा एक बन में जाकर फ़ौजसे जुदा हो गया; और लोग सवारी के एक और जंगल में भटक गये. लेकिन एक चिरमदेवही राजा के पीछे था. निदान उसने ही पुकारकर कहा महाराज! लोग सवारी के पीछे रह गये हैं; और मैं आपके घोड़े के साथ घोड़ा मारे चला आता हूं. राजा ने यह सुन के घोड़े को रोका, कि इसमें यह बराबर आया. राजा ने उसे देख के पूछा तू किसवास्ते इतना दुर्बल हो रहा है.

तब यह बोला जिस स्वामीके पास रहिये, और वह ऐसा हो, कि हज़ारों को पालता हो और अपनी ख़बर न ले, तो इसमें उसको कुछ दोष नहीं. मगर अपने करम का दोष है. जैसे दिन को सारा जहान देखता है, पर उल्लू को नज़र नहीं आता; इसमें गुनाह सूरजका क्या है. हैरत है मुझ को, कि जिसने माके पेट में रोज़ी पहुंचाई थी; जब कि हम पैदा हुए और दुनिया की ग़िज़ाओं के लाइक़, अब वह ख़बर नहीं लेता. नहीं मअ़लूम कि सोता है, या मर गया. और अपने नज़दीक माल औ दौलत चाहनी किसी बड़े आदमी से कि देते वक़्त वह मुंह बनावे, और नाक भौं चढ़ावे. इस से ज़हर हलाहल

खाकर मर जाना बिहतर है. और ये छः बातें आदमी को हलका करती हैं; एक तो खोटे नर की प्रीति, दूसरे बिना कारन की हंसी, तीसरे स्त्री से बिवाद करना, चौथे असज्जन स्वामी की सेवा, पांचवें गधे की सवारी, छठे बिना संसकृत की भाषा. और ये पांच चीज़ बिधाता मनुष के कर्म में पैदा होतेही लिख देता है; एक तो आरबल, दूसरे करम, तीसरे धन, चौथे विद्या, पांचवें यश. महाराज! जब तक आदमी का पुन्य उदै होता है, सब उसके दास बने रहते हैं. और जब पुन्य घट जाता है, तो बंधु बैरी हो जाते हैं. पर यह एक बात मुक़र्रर है सुस्वामी की सेवा करने से कभी न कभी फल मिल रहता है; निरफल नहीं रहता.

यह सुन, राजा ने उन सब बातों को ग़ौर कर उस वक़्त कुछ जवाब न दिया; पर उससे यह कहा कि मुझे भूख लगी है; कहीं से कुछ खाने को ला. चिरमदेव ने कहा महाराज! यहां अन्न भोजन न मिलेगा. यह कह, जंगल में जा, एक हिरन मार, खीसे से चकमक निकाल, आग सुलगा, गोश्त के भसतिके भून, राजा को ख़ूब से खिला आप भी खाये. ग़रज़ जब राजा का पेट भर चुका, तो उस ने कहा ऐ राजपुत्र! अब हमें नगर को ले चलो, कि राह मुझे मअ़लूम नहीं. उसने राजा को नगर में ला उसके मंदिर में पहुंचा दिया. तब राजा ने उसकी चाकरी मुक़र्रर कर दी, और बहुत से उसे बस्त्र आभूषन दिये. फिर वह राजा की सेवा में हाज़िर रहने लगा.

गरज़, एक दिन राजा ने, किसी काम के लिये, समुद्र कनारे उस राजपुत्र को भेजा. वह जब कनारे पहुंचा तो उसने एक देवी का मंदिर देखा. उस में जा, देवी की पूजा की. लेकिन जब यह वहां से बाहर निकला तो वोंहीं उसके पीछे से एक सुंदर नायका आ उससे पूछने लगी ऐ पुरुष! तू किस लिये यहां आया है? वह बोला ऐश के लिये आया हूं; और तेरे रूप को देख, मैं मफ़तून ऊआ हूं. उसने कहा जो मुझ से कुछ इरादः रखता है, तो पहले इस कुण्ड में जाके अश्नान कर; फिर उस के पीछे जो तू मुझे कहेगा सो मैं सुनूंगी.

यह सुनतेही, वह कपड़े उतार, तालाब में पैठ, गोता मार, निकलकर देखे तो अपने नगर में खड़ा है. इस अचंभे को देख, तरसनाक हो, लाचार अपने घर जा, और कपड़े पहन, राजा के पास आ सब वृतान्त कहा. राजा ने सुनतेही कहा मुझे भी यह अचंभा दिखा. यह कहतेही, सवारी मंगा, दोनों सवार हो कर चले. कितने दिनों के अरसे में, सागर के किनारे आये. उसी देवी के मंदिर में जाकर पूजा की. फिर राजा जब बाहर निकला, तो वही नायका, एक सखी साथ लिये, राजा के पास आन खड़ी ऊई. और राजा का रूप देख, मोहित हो बोली ऐ राजा! जो मुझे आज्ञा दे सो करूं. राजा ने उसे उत्तर दिया जो तू मेरा कहा करे तो मेरे सेवक की स्त्री हो. वह बोली मैं तेरे रूप की आधीन ऊई हूं; इसकी जोरू किस तरह से होऊं. राजाने कहा अभी तो

तू ने मुझ से कहा जो तू हुकम करेगा सो मैं करूंगी. और सज्जन जिस बात को कहते हैं उसका निबाह करते हैं. अपने बचन को पाल; मेरे सेवक की जोरू हो. यह सुन के वह बोला जो आप ने कहा सो मुझे प्रमान है. तब राजा, सेवक का गंधर्व बिवाह कर, दोनों को साथ ले, अपने राजधाम में आया.

इतनी बात कह, बैताल बोला राजा! बताओ स्वामी और सेवक में किस का सत अधिक ऊआ. राजा बोला सेवक का. फिर बैताल बोला कि जिस राजा ने ऐसी सुंदर स्त्री पा सेवक को दी तिस राजा का सत अधिक न ऊआ. तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा जिनका धर्म उपकार करना है, तिनके उपकार करने में अधिक क्या है. और जो आपकाजी हो परकाज करे, सोही अधिक है. इस कारन सेवक का सत अधिक ऊआ. यह बात सुन, बैताल उसी तरवर पर जा लटका. और राजा जा, फिर उसे वहां से उतार, कांधे पर रख ले चला.

नवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! मदनपुर नाम एक नगर है. वहां बीरबर(१) नाम राजा था. और उसी देस में हिरन्यदत्त(२) नाम एक बनिया; कि उसकी बेटी का नाम मदन-

(१) वीरवर. (२) हिरण्यदत्त.